श्री नेमिनाथ

ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री नेमिनाथ दीप अर्चना/ऋद्धि विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
कवर-पृष्ठ	:	विशाल जैन (गोलू) बैराड़
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
प्रसंग	:	श्री १००८ श्री मुनिसुव्रतनाथ तीस- चौबीसी जिनालय नरवर किला उरवाहा पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव ७ से १२ मार्च २०२१
लागत मूल्य	:	२०/-
प्रकाशक	:	श्री जैनोदय विद्या समूह
प्राप्ति स्थान	:	निखिल, सुशील जैन करैरा, झाँसी 9806380757, 9407202065
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

ब्र. अंशू भैया जी

श्रीमती मोतियाबाई, श्री रवीन्द्र-श्रीमती इन्द्रा

विजय- श्रीमती मधु, मनीष-श्रीमती रजनी

प्रांजल, पुलक, संभव, खुशी सिंघई परिवार

कोलारस जिला शिवपुरी (म.प्र.)

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह चैतन्य चमत्कारी श्री नेमिनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री नेमिनाथ दीप अर्चना/ऋद्धि विधान'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

जिन लोगों ने इस कृति में जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- 9425128817

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शांति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

(दोहा)

निज निर्ग्रन्थ निवास में, जो निरखें निजधाम।
ऐसे नेमिजिनेश को, पूजें करें प्रणाम॥

(लय : माता तू दया करके...)

श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।
जब कुछ नहिं सूझा तो, हाथों को हि जोड़ चले॥
हे! नेमिनाथ जिनवर, चैतन्य विरामी हो।
रह के कण-कण में भी, प्रभु अंतर्यामी हो॥
तुम जीव दया करने, त्यागे अपनी खुशियाँ।
हम भले उजड़ जाएँ, पर सुखी रहे दुनियाँ॥
फिर राज-भोग छोड़े, राजुल भी ना भायी।
तो चेतन की खुशबू, झट मुक्ति वधू लायी॥
हे! दयामूर्ति हम पर, प्रभु एक दया कर दो।
हम करें नमोऽस्तु तो, मन-चिदानन्द भर दो॥
श्रद्धा की केशरिया...।

(दोहा)

भक्ति सुमन ये भेंटकर, नाँच उठे मन मोर।
हृदय वसो तो हम चलें, मोक्षमहल की ओर॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

अपनों ने हि जन्म दिया, अपनों ने हि मार दिया।
फिर भी अपनों से क्यों, हमने तो प्यार किया॥

अपनों का अपनापन, जल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

अपनों ने हि ईर्ष्या से, अपनों को जला दिए।
फिर भी ना राख हुए, कितने भव गवाँ दिए॥
अपनों की यह ईर्ष्या, चंदन से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

अपनों ने हि घाव दिए, तो आँसू भी झलके।
हम उन्हें मित्र मानें, जो साथी नहिं पल के॥
अपनों की ये पीड़ा, अक्षत से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपनों ने जो जाल रचे, उनमें अपने ही फँसे।
काँटों से बच निकले, पर फूलों में उलझे॥
अपनों की उलझ-सुलझ, पुष्पों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

अपनों की तलाश में हम, नित भूख-प्यास सहते।
हम जिनको अमृत दें, वे हमें जहर देते॥
अपनों के विष-अमृत, नैवेद्य से हम हर लें।

साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

अपनों ने ही भटका के, दर-दर की ठोकर दीं।
हम रहें अँधेरे में, अपना सब खोकर भी॥
अपनों की यह भटकन, दीपों से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

अपनों ने हि धोखे से, अपना सब कुछ छीना।
जीने की आश न थी, फिर भी तो पड़ा जीना॥
अपनों के ये धोखे, प्रभु धूप से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

अपनों की मृग-तृष्णा, सपनों को दिखाकर के।
हमको लूटे तो हम, भागे मुँह छिपाकर के॥
अपनों के ये सपने, फल से हम भी हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया...।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

अपनों ने हि साथ दिया, जब सुख से दिन गुजरे।
सब छोड़ गए हम को, जब भाग्य कमल उजड़े॥

फिर भी अपनों का यह, हम राग न छोड़ सके।
प्रभु सामने हैं पर हम नाता न जोड़ सके॥
प्रभु के रंग में हम भी, अब रंगने को आए।
जो है शाश्वत अपना, वह संग पाने आए॥
अपनों की यह भ्रमणा, प्रभु अर्घ्य से हम हर लें।
साँवरिया नेमिप्रभु, हम तुम्हें नमन कर लें॥
श्रद्धा की केशरिया, हम चादर ओढ़ चले।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
जब हुआ गर्भ कल्याणक था, तब रत्न-दृश्य मनमोहक था।[२]
फिर शौर्यपुरी में आन पधारे नेमि-जिससे दुनियाँ हर्षानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

(दोहा)

कार्तिक षष्ठी शुक्ल में, शिवदेवी के गर्भ।
नेमिप्रभु जी आ वसे, तजकर जयन्त स्वर्ग॥

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्लषष्ठ्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु जन्म लिए तो सुर पहुँचे, नृप समुद्रविजय के घर नाँचे।[२]
अभिषेक मेरु पै देव करें वरदानी, प्रभु पाण्डुकशिला विरामी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, हुआ जनम का शोर।
समुद्रविजय के आँगने,नेमि किए किलकोर॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु देख प्राणियों का क्रन्दन, झट तजे राज राजुल बन्धन।[२]
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना-पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

श्रावण षष्ठी शुक्ल में, पशुओं की सुन त्राण।
नेमिप्रभु तप से सजे, हम तो करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लषष्ठ्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

प्रभु ध्यान लगाकर जब बैठे, तब घातिकर्म बन्धन टूटे।[२]
फिर समवसरण में दिए देशना ज्ञानी, सबने पूजी जिनवाणी॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी....

शुक्ला एकम् क्वांर को, घाति कर्म जयोऽस्तु।
मोक्षमार्ग अध्यात्म-दा, नेमि प्रभु को नमोऽस्तु॥

ॐ ह्रीं अश्विनशुक्लप्रतिपदायां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

सब कर्म हरे गिरिनारी से, फिर मिले मुक्ति की नारी से।[२]
देवों ने उत्सव करने की फिर ठानी, अब हम तो करें नमामि॥
श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ाके अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥

आठें (सातें) शुक्ल अषाढ़ को, प्राप्त किए निर्वाण।
नेमिप्रभु गिरनार को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं आषाढ़शुक्ल-अष्टम्यां (सप्तम्यां) मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. २४ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

चार-चार पुरुषार्थ करें जो, वो तीर्थंकर ज्ञानी।
पंच बालयति हुए उन्हीं में, नेमिनाथ जिन स्वामी॥
चढ़ी न हल्दी रँगी न मेहँदी, सचमुच ये तो हीरा।
राज रमा राजुल के त्यागी, बन बेठै भव तीरा॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः-४
नेमिनाथ गिरनार चढ़े फिर, मोक्षमहल की चोटी।
जिनके नाम मंत्र को जप के, राह मिले न खोटी॥
भव-बंधन के हर्ता खोलें, 'सुव्रत' के हर ताले।
रोग शोक दुख दर्द मिटा के, खुशियाँ देने वाले॥
ओम् नमः सिध्देभ्यः-४
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल जन-जन मंगल होवे।
नेमिनाथ को करके नमोस्तु, जग का मंगल होवे॥
ओम् नमः सिद्धेभ्य-४

===

श्री नेमिनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

अर्घ्यावली

(सखी)

जय कर्म इंद्रियाँ कर जो, अरिहंत बने जिनवर वो।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१॥

पा अवधिज्ञान की ज्योति, गति सुगम जीव की होती।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२॥

परमावधि ज्ञान कला से, प्रभु मिले मुक्ति माला से।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३॥

सर्वावधि ज्ञान दिवाकर, दुख रात हरो जिन-भास्कर।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४॥

पा लिए अनन्तावधि को, कर लिए पार भवदधि को।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो अणंतोहिजिणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥५॥

हो कोष्ठबुद्धि के ज्ञानी, हर काम बनाओ स्वामी।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥६॥

बो बीजबुद्धि की फसलें, संरक्षित कर दी नस्लें।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥
ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥७॥

पा पदानुसारी रथ को, निर्देशित करते पथ को।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥
ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥८॥

संभिन्नश्रोतृ की वीणा, हरती हम सबकी पीड़ा।
श्री नेमिनाथ हम पूजें, जयकारे नमोस्तु गूँजे॥
ॐ ह्रीं णमो संभिण्णसोदाराणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥९॥

(हाकलिका)

स्वयंबुद्ध से हो ज्ञानी, हरो सभी की हैरानी।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥
ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥१०॥

हे! प्रत्येकबुद्ध त्यागी, हमें बना लो वैरागी।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥
ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥११॥

बोधितबुद्ध निराले हो, हम सबके रखवाले हो।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥
ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../ अर्घ्यं...॥१२॥

ऋजुमति ज्ञान मनःपर्यय, दे हम सबको शत्रु विजय।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१३॥

ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय, भटकन हर दे निज आलय।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१४॥

दस पूर्वों के हो ज्ञाता, सबको देते सुख साता।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१५॥

चौदह पूर्वों के पाठी, सबसे अलग राह छाँटी।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../ दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥१६॥

धर अष्टांग निमित्तों को, गले लगाते भक्तों को।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धि धरें, हम में सुख समृद्धि भरें।
नेमिनाथ जी अलबेले, नमोस्तु करते हम चेले॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१८॥

(शुद्ध गीता)

असंयम त्याग विद्याधर, करें स्वीकार संयम को।
वहीं पर आत्मा झलके, जहाँ थामें निजातम को॥
सभी के लाड़ले नेमि, हमें प्राणों से प्यारे हैं।
करें सादर नमोस्तु हम, हमारे भाग्य जागे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥१९॥

मिली चारण महा ऋद्धि, खिली आतम ऋषीश्वर की।
जहाँ रख दें चरण अपने, दिखे मूरत मुनीश्वर की॥
सभी के लाड़ले नेमि, हमें प्राणों से प्यारे हैं।
करें सादर नमोस्तु हम, हमारे भाग्य जागे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ २०॥

बिना पढ़ के हुए ज्ञानी, वही प्रज्ञा श्रमण होते।
नशाएँ दोष भक्तों के, वही अज्ञान दुख खोते॥
सभी के लाड़ले नेमि, हमें प्राणों से प्यारे हैं।
करें सादर नमोस्तु हम, हमारे भाग्य जागे हैं॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२१॥

(लघु चौपाई)

कर आकाश गमन स्वीकार, करें स्वस्थ-सुखिया संसार।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२२॥

मर जा कहने पर मर जाएँ, पर ये वचन प्रयोग न लाएँ।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२३॥

जहरीली नजरों को धार, अहित न करती मुनि-सरकार।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२४॥

दीक्षा ले करते तप उग्र, कर्मों को कर देते क्षुद्र।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२५॥

बेला आदिक कर उपवास, बढ़े कायबल दीप्त प्रकाश।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२६॥

कर आहार न हुआ निहार, तप्त तपों की जय-जयकार।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२७॥

महा तपस्याएँ उपवास, हरें समस्याएँ दुख-वास।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥२८॥

करें साधना तपसी घोर, जग को छोड़ चले शिव ओर।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ २९॥

घोर गुणों को करके प्राप्त, दोष त्याग दें अर्हम-आप्त।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३०॥

जगत विनाशक पा सामर्थ्य, घोर पराक्रम करें न व्यर्थ।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३१॥

अघोरब्रह्म से हरते रोग, स्वामी हरें पाप संयोग।
जय हो! श्री नेमि भगवान, नमोस्तु कर्त्ता पर दो ध्यान॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३२॥

(जोगीरासा)

जिनकी काया छूकर होती, दुनियाँ स्वस्थ निरोगी।
त्याग तपस्या की यह महिमा, हमें बना दे योगी॥
परम पूज्य आमर्ष औषधि, हमको स्वस्थ बनाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३३॥

लार थूक कफ आदि ऋषि के, खेल्ल कहाते सारे।
बनें तपस्या से सब औषधि, रोग-शोक परिहारे॥
खेल नहीं ये खेल्ल औषधि, हमको स्वस्थ बनाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३४॥

दूर व्याधियाँ हो जाती हैं, छूकर बूँद पसीना।
रत्नत्रय जल पा कर चमके, आतम रत्न नगीना॥
जीवन दे ये जल्ल औषधि, हमको स्वस्थ बनाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३५॥

ऋषि के मल-मूत्रों को छूकर, पवन जहाँ भी जाए।
करें निरोगी जीव मात्र को, सबको स्वस्थ बनाए॥
विकार हरती विप्रुष औषधि, सारे दोष नशाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३६॥

सर्वौषधि को धार ऋषीश्वर, रोग व्याधियाँ टालें।
थोड़ा हम पर नाथ! ध्यान दो, आत्म शान्ति हम पा लें॥
सर्वौषधि सुख देकर जग से, सारे दोष नशाएँ।
नेमिप्रभु को करके नमोस्तु, गिरनारी चढ़ जाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥३७॥

(दोहा)

एक मुहूरत में करें, चिंतन श्री श्रुतज्ञान।
थोड़ा हम पर ध्यान दो, नेमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३८॥

एक मुहूरत में करें, वाचन श्री श्रुतज्ञान।
थोड़ा हम पर ध्यान दो, नेमिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ३९॥

(विष्णु)

कायोत्सर्ग धारने लायक, किए साधनाएँ।
उत्तम संहनन पाकर साधक, सबका हित ध्याएँ॥
मुक्ति योग्य कायबल पाने, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४०॥

ऋषियों का आहार क्षीर सम, हुआ तपस्या से।
चरण-शरण जिनकी पाकर हम, बचें समस्या से॥
पूज्य क्षीरस्रावी ऋषिगण को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ४१॥

ऋषियों का भोजन घी जैसा, हुआ साधना से।
छत्र-छाँव जिनकी पाकर हम, जुड़ें प्रार्थना से॥
सर्पिस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४२॥

ऋषियों का भोजन घी जैसा, हुआ साधना से।
छत्र-छाँव जिनकी पाकर हम, जुड़ें प्रार्थना से॥
सर्पिस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ४३॥

विषाक्त भोजन अमृत जैसा, हुआ भावना से।
नाम-मंत्र जिनका जपकर हम, बचें याचना से॥
अमृतस्रावी ऋषिगण को तो, हम पूजें आहा।

ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं (अमियसवीणं)श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४४॥

शेष भोज्य से कटक पेट भर, एक जगह रह लें।
चरण-धूल जिनकी पाकर के, सम्यक् तप कर लें॥
यह अक्षीण माहनस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४५॥

तीन लोक के सिद्धक्षेत्र सब, तीन काल वाले।
सिद्ध-भक्तियों से भक्तों के, कर्म कटें काले॥
ओम् नमः सिद्धेभ्यः जप के, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४६॥

आतम गुण को प्रकटाने को, सभी दोष त्यागे।
गुण-गण का भण्डार देख कर, जग पीछे भागे॥
वर्धमान चारित्र गुणी को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥ ४७॥

जिनशासन की पता-पताका, नग्न साधु होते।
यही रहे स्तम्भ धर्म के, पाप कर्म खोते॥
दिगम्बरत्व की परम्परा को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं नेमिनाथ जिनेद्राय नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय दीपं प्रज्ज्वलनं.../अर्घ्यं...॥४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थकरों के रूप नेमि, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धि सम्पन्न श्रीनेमिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री नेमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

धार्मिक रथ की जो धुरी, धर्मचक्र की हाल।
जिनवर नेमि दयेश की, अब कहते जयमाल॥

(ज्ञानोदय)

जिनके तपश्चरण की चर्चा, तीन लोक में गूँज रही।
जीवदया वैराग्य कथा को, सारी दुनियाँ पूज रही॥
अन्य-सभी तीर्थंकर से भी, जिनके अतिशय भिन्न रहे।
ऐसे नेमिनाथ जिनवर के, गुण गा हृदय प्रसन्न रहे॥ १॥
अतः करें गुणगान भक्त हम, आश्रय ले जयमाला का।
जो पिछले भव अपराजित थे, ऐसे प्रभु जग-पाला का॥
अपराजित कर मृत्यु महोत्सव, सोलहवे सुर जन्म लिए।
स्वर्ग त्यागकर सुप्रतिष्ठ बनकर, उल्कापातन देख लिए॥ २॥
धर वैराग्य लिए दीक्षा फिर, तीर्थंकरप्रकृति पाए।

समाधिमरण कर स्वर्ग गए फिर, स्वर्ग त्याग भू पर आए॥
शिवदेवी को सोलह सपने, दिए गर्भ कल्याणक में।
ऐरावत से चले मेरु पर, प्रभो! जन्म कल्याणक में॥ ३॥
धर्मचक्र की धुरा धरी सो, नेमिनाथ शुभ नाम पड़ा।
जिन्हें देख आनन्द बरसता, विश्व जोड़कर हाथ खड़ा॥
बचपन बीता अणुव्रत जैसा, फिर जिन पर यौवन छाया।
तभी मनोहर जलक्रीड़ा का, एक सुखद अवसर आया॥ ४॥
वहाँ सत्यभामा के ऊपर, नेमिनाथ जल उछलाए।
वस्त्र नहाने का तुम धो दो, यूँ कहकर कुछ इठलाए॥
क्या तुम काम श्याम के जैसे, कर सकते भामा बोली।
अगर नहीं तो हुक्म करो क्यों?, ये बोली बन गई गोली॥ ५॥
नेमिनाथ ने शंख फूँककर, नवयौवन की ध्वनि कर दी।
राजीमति से विवाह बन्धन, करने को मँगनी कर ली॥
तभी श्याम को हुई आशंका, कहीं कभी ना हो एसा।
नेमिनाथ जी राज्य हमारा, ले ना लें तो हो कैसा॥ ६॥
अतः उन्हें वैराग्य कराने, को षड्यन्त्र रचा डाले।
मृग पशुओं को शिकारियों को, बाड़ी में भरवा डाले॥
जूनागढ़ बारात गयी तो, नेमि उन्हीं का दुख देखे।
धर वैराग्य तजे राजुल को, विवाह बन्धन भी फेंके॥ ७॥
चले देवकुरु शिविका से ली, गिरिनारी में मुनिदीक्षा।
पीछे - पीछे राजुल पहुँची, बनी आर्यिका ली दीक्षा॥
द्वारावति के जो राजा थे, श्री वरदत्त महा न्यारे।
वहीं पारणा दीक्षा की हुई, पंचाश्चर्य हुए प्यारे॥ ८॥
छप्पन दिन छद्मस्थ बिता के, गिरिनारी पर्वत पर जा।
बने बाँस के नीचे ध्यानी, केवलज्ञान तभी उपजा॥

ज्ञान पर्व देवों ने करके, समवसरण भी सजा दिया।
ग्यारह गणधर की संसद को, नेमिनाथ ने जगा दिया॥ ९॥
भव्यजनों के नेमिनाथ ने, कहे भवांतर जैसे ही।
सभी पाण्डवों ने दीक्षा ले, धारा संयम वैसे ही॥
कुन्ती सुभद्रा और द्रौपदी, बनी आर्यिका सुर-वासी।
विहार करते शत्रुंजय पर, पाण्डव पहुँचे संन्यासी॥ १०॥
दुर्योधन के भांजे ने फिर, वहाँ घोर उपसर्ग किए।
दो पाण्डव तो स्वर्ग सिधारे, तीन मोक्ष को गमन किए॥
इधर नेमिप्रभु गिरिनारी पर, योग निरोध किए स्वामी।
कर्मनष्ट कर मोक्ष पधारे, हम चरणों में प्रणमामि॥ ११॥
ब्रह्मदत्त भी जरासंध भी, पद्म कृष्ण भी तब जन्मे।
तब ही हुआ महाभारत था, नेमिनाथ के शासन में॥
द्वन्द्व-फन्द हर्त्ता को बाँधो, गुरु दिन राहु-ग्रह में क्यों।
ऋद्धि-सिद्धि हों काम बनें सब, प्रभु की जय बस बोलो तो॥१२॥
सजा-धजा था विवाह मण्डप, नेंग और दस्तूर हुए।
सजे बराती शोभे दुल्हन, नेमि सभी से दूर हुए॥
राजुल जैसे हमें न छोड़ो, थामो नाजुक हाथों को।
'सुव्रत' की बस यही प्रार्थना, हर लो गम की रातों को॥ १३॥

(सोरठा)

चरण शरण में शंख, नेमिनाथ का चिह्न है।
मिले भक्ति के पंख, उड़कर भक्त प्रसन्न हैं॥
परम शुद्ध अध्यात्म, लोक शिखर शिवधाम है।
नेमिनाथ दो दान, सादर अतः प्रणाम है॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

नेमिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, नेमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा—श्री नेमिनाथ दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिनाथ का पाठ, करो दिन-रात, ठाठ से प्राणी,
हो मंगलमय कल्याणी।
श्री नेमिनाथ कल्याणी हैं, जिनके पूजक हर प्राणी हैं।
हैं बाल ब्रह्मचारी आतम के ज्ञानी, सुख शांति प्रदाता स्वामी॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
प्रभु जाप रोग दुख हर्ता हैं, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता हैं।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभुकी कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
श्री नेमिनाथ का पाठ...।

===

श्री नेमिनाथ—आरती

(लय—छूम छूम छना ननना...)

छूम छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥छूम छूम...
नेमिनाथ भगवान हमारे, हम सबको प्राणों से प्यारे।
जग के हो उजयारे, बाबा करूँ आरतिया ॥ करूँ...
समुद्रविजय के राज दुलारे, शिवदेवी के नयन सितारे।-२
शौरीपुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता।-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ।
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सु-व्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।